

संपर्क सरिता

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल की त्रैमासिक पत्रिका

संपादक-मंडल

निदेशक
प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

संपादक
प्रो. पी.के. पुरोहित

सह-संपादक
श्रीमती बबली चतुर्वेदी

डिज़ाइन
श्री जितेन्द्र चतुर्वेदी

छायांकन
श्री रितेन्द्र पवार



राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक
प्रशिक्षण एवं अनुसंधान
संस्थान, भोपाल
(समविश्वविद्यालय, विशिष्ट श्रेणी अंतर्गत)
शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार,
शामला हिल्स,
भोपाल 462002,
(म.प्र.) भारत

सोशल मीडिया लिंक

twitter.com/nitttrbpl

facebook.com/nitttrbhopalofficial

instagram.com/nitttrbhopal



**करुणा का भूमंडलीकरण
केवल भारत ही कर सकता है:
श्री कैलाश सत्यार्थी**

संस्थान ने अपने 61वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह का आयोजन किया। इस ऐतिहासिक अवसर पर नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता श्री कैलाश सत्यार्थी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अपने उद्बोधन में श्री कैलाश सत्यार्थी ने नितर भोपाल को स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विकास की परिकल्पना तब तक अधूरी है, जब तक उसमें परस्पर सहयोग, संवेदनशीलता और करुणा का समावेश न हो। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि करुणा का भूमंडलीकरण केवल भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राष्ट्र द्वारा ही संभव है। उनके अनुसार, "व्यक्ति के भीतर जब तक दया और करुणा का संचार नहीं होगा, तब तक वह सच्चे अर्थों में संवेदनशील नहीं बन सकता। मनुष्य को अपने मन, वचन और कर्म से ईमानदार होना चाहिए, क्योंकि इसी से समाज का समग्र और समावेशी विकास सुनिश्चित हो सकता है। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के साथ-साथ "कंपैशनेट इंटेलिजेंस" यानी संवेदनशील बुद्धिमत्ता की आवश्यकता पर बल दिया, और यह भी स्पष्ट किया कि "एक शिक्षक का स्थान कोई कंप्यूटर नहीं ले सकता।" उनका प्रेरणादायक वक्तव्य न केवल श्रोताओं को भावविभोर कर गया, बल्कि संवेदनशीलता, करुणा और वैश्विक समन्वय की दिशा में एक नई सोच भी प्रदान कर गया।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर सी.सी. त्रिपाठी ने पिछले 61 वर्षों की संस्थान की यात्रा को विस्तारपूर्वक रेखांकित करते हुए कहा कि स्थापना दिवस केवल उत्सव का दिन नहीं, बल्कि यह उस गौरवशाली अतीत पर गर्व करने और आने वाली चुनौतियों के लिए आत्ममंथन एवं आत्मनिर्माण का अवसर होता है। उन्होंने गुणवत्तापूर्ण तकनीकी

प्रशिक्षण, टेक्नोलॉजी ट्रांसफर, इंडस्ट्री-इंटरफेस, इंटरनेटशिप्स, स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम्स, डिजिटल शिक्षा, और AI-संचालित शिक्षण विधियों के माध्यम से "मेक इन इंडिया" को मजबूती प्रदान करने की संस्थान की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। साथ ही, अनुसंधान में नेतृत्व की भूमिका को भविष्य के लिए अत्यंत आवश्यक बताया।

इस अवसर पर संस्थान के डीन, कॉर्पोरेट एंड इंटरनेशनल रिलेशन्स, प्रो. पी.के. पुरोहित ने श्री कैलाश सत्यार्थी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनका "बचपन बचाओ आंदोलन" आज 144 देशों तक विस्तारित हो चुका है। दुनियाभर में श्री सत्यार्थी करुणा, साहस और सत्यनिष्ठा के प्रतीक बन चुके हैं। इस विशेष दिन पर संस्थान की 61 वर्षों की यात्रा और श्री कैलाश सत्यार्थी के जीवन एवं कार्यों पर आधारित दो लघु फिल्मों का भी प्रदर्शन किया गया। एक ऐतिहासिक निर्णय के तहत संस्थान में प्रस्तावित आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग (AI/ML) के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की प्रयोगशाला का नाम "कैलाश सत्यार्थी लैब" रखा गया, जो उनकी प्रेरणा से नवाचार और मानवीय मूल्यों के समन्वय का प्रतीक होगी।

कार्यक्रम के अंतर्गत विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आयोजन भी किया गया, जिसमें संस्थान और कर्मचारियों ने सहभागिता की। इस समारोह में विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्रीमती सुमेधा सत्यार्थी, श्रीमती वंदना त्रिपाठी, प्रो. आर. के. दीक्षित, प्रो. संजय अग्रवाल, तथा अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन मेजर निशांत ओझा ने दिया व संचालन श्रीमती अनीता लाला द्वारा किया गया।

संस्थान में राष्ट्र जागरण की ध्वजवाहिका:
लोकमाता अहिल्याबाई पर दो दिवसीय शोध सम्मेलन
लोकमाता अहिल्याबाई भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रतीक थीं: श्री इन्दर सिंह परमार
सेवा को साधना बनाने वाली शासिका थीं अहिल्याबाई: श्रीमती कृष्णा गौर



संस्थान में लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर की त्रिशताब्दी जयंती के अवसर पर "लोकमाता अहिल्याबाई: राष्ट्र पुनरुत्थान की संकल्पना" विषय पर दो दिवसीय अखिल भारतीय शोध सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस शोध सम्मेलन का उद्घाटन माननीय श्री इन्दर सिंह परमार, मंत्री – उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष विभाग, मध्यप्रदेश शासन द्वारा किया गया। श्री परमार ने उद्घाटन सत्र में कहा कि लोकमाता अहिल्याबाई भारतीय ज्ञान परंपरा की जीवंत प्रतीक थीं। उन्होंने मंदिरों के पुनर्निर्माण, धार्मिक स्थलों के संरक्षण, लोक-शिक्षा के विस्तार और समाज कल्याण जैसे कार्यों को अपने जीवन का ध्येय बनाया। उनकी राष्ट्रव्यापी दृष्टि आज भी प्रेरणादायी है।

इस अवसर पर बीज वक्तव्य देते हुए श्री हैमंत मुक्तिबोध ने लोकमाता के जीवन को "बिंदु से विराट व्यक्तित्व" बनने का चरम उदाहरण बताया। उन्होंने कहा कि अहिल्याबाई कोई दिव्य अवतार नहीं थीं, फिर भी उनमें अवतारी प्रतिभा और गुण समाहित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कैप्टन मीरा सिद्धार्थ दवे ने की, उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि लोकमाता अहिल्याबाई वह एकमात्र शासिका थीं जिन्हें 'पुण्यश्लोक' की उपाधि प्राप्त हुई। उनका जीवन संघर्षों से भरा था, फिर भी वे अपने कर्तव्यों से कभी विमुख नहीं हुईं। राष्ट्र उनके लिए सर्वोपरि था।

संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने कहा कि यह सम्मेलन केवल अकादमिक संवाद का मंच नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक स्मृति और राष्ट्र निर्माण की चेतना का एक अभिनव संगम है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है की इस सम्मेलन में 125 से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए जिनका चयन गुणवत्ता के आधार पर किया गया है। प्रो. पी.के. पुरोहित, समन्वयक आयोजन समिति ने कहा कि 'परंपरा की शिक्षा' और 'शिक्षा की परंपरा' दोनों को साथ लेकर चलना ही भारत की शिक्षा प्रणाली का मूल मंत्र है। यह सम्मेलन लोकमाता अहिल्याबाई के जीवन-दर्शन को वर्तमान संदर्भ में पुनः समझने, उनके आदर्शों को भारत के नव निर्माण से जोड़ने, और भारतीय ज्ञान परंपरा को एक समकालीन शैक्षणिक विमर्श में स्थान देने का एक विचारशील प्रयास है। सम्मेलन का समापन सत्र श्रीमती कृष्णा गौर, राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), मध्यप्रदेश शासन की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा, "यह शोध सम्मेलन केवल अतीत का स्मरण नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा निर्धारण का वैचारिक आधार है। लोकमाता अहिल्याबाई ने 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' के सिद्धांत पर शासन करते हुए भारतीय प्रशासनिक आदर्शों को नया स्वरूप दिया।" समापन सत्र के मुख्य वक्ता श्री दीपक विस्फुते ने शोधार्थियों का आह्वान किया कि वे पाठ्यक्रम की सीमा से बाहर जाकर चिंतन और मौलिक शोध करें। उन्होंने भारत की बौद्धिक परंपरा को पुनः जाग्रत करने की आवश्यकता पर बल दिया।

इस कार्यक्रम में लोकमाता अहिल्याबाई: राष्ट्र पुनरुत्थान की संकल्पना के पांच विषयों न्यायप्रियता एवं प्रशासनिक दक्षता, पंच परिवर्तन से लोक कल्याण, सांस्कृतिक पुनर्निर्माण से राष्ट्र जागरण, नारी स्वाभिमान जागरण से समाज उत्थान और सामाजिक कुरीतियों की चुनौतियाँ और उनका समाधान पर शोध पत्र प्रस्तुत किये गए। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में उक्त पांच विषयों पर श्रीमती माला ठाकुर, श्रीमती निवेदिता चतुर्वेदी, श्रीमती चिन्मयी दीदी, श्रीमती अनाज्ञा ताई व कैप्टन मीरा सिद्धार्थ दवे ने विस्तृत व्याख्यान दिए। सम्मेलन के सहयोगी संस्थानों से उनके कुलगुरु श्री संजय तिवारी, कुलगुरु – मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, श्री विजय मनोहर तिवारी, कुलगुरु – माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, प्रो. बैजनाथ लाभ, कुलगुरु – साँची बौद्ध भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय, श्री खेमसिंह डेहरिया, कुलगुरु – अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, श्री सुरेश कुमार जैन, कुलगुरु – बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, श्री सुरेन्द्र मिश्रा – पुरुषार्थ सेवा फाउंडेशन आदि सम्मानित गण उपस्थित थे। समापन सत्र में शोध



पत्रों की सार पुस्तिका का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर प्रो. सचिन तिवारी, सचिव आयोजन समिति ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की, तथा प्रो. पी.के. पुरोहित, समन्वयक आयोजन समिति ने आभार ज्ञापन दिया। उद्घाटन सत्र का संचालन श्रीमती अनीता लाला व समापन सत्र का संचालन श्रीमती बबली चतुर्वेदी द्वारा किया गया।



संस्थान में पहलगाम आतंकी हमले के शहीदों को श्रद्धांजलि

पहलगाम में आतंकी हमला, मानवता पर गहरा प्रहार : प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

संस्थान में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए भीषण आतंकी हमले में जान गंवाने वाले निर्दोष नागरिकों की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस हृदयविदारक घटना में कुल 26 नागरिकों की अकाल मृत्यु ने पूरे देश को शोकसंतप्त कर दिया है। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी, समस्त अधिकारीगण, संकाय सदस्य और कर्मचारी एकत्र हुए व दो मिनट का मौन रखकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। प्रो. त्रिपाठी ने श्रद्धांजलि सभा में अपने सन्देश में कहा कि यह केवल एक आतंकी हमला नहीं, बल्कि मानवता पर एक गहरा और अमानवीय प्रहार था। जो लोग इस हमले

में मारे गए, वे केवल नाम नहीं थे; वे अपने परिवार की उम्मीद, समाज की शक्ति और हमारे राष्ट्र का गौरव थे। हम उन परिवारों के साथ हैं जिन्होंने अपनों को खोया है। यह दुख असहनीय है, और हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को शांति और परिजनों को धैर्य और साहस प्राप्त हो। श्रद्धांजलि सभा के दौरान उपस्थित समस्त संकायगण, अधिकारीगण व कर्मचारियों ने इस निंदनीय और कायरतापूर्ण कृत्य की कड़ी निंदा की और यह संकल्प लिया कि आतंकवाद के विरुद्ध राष्ट्र की एकता, शांति और अखंडता को बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा।



कौशल विकास में नया अध्याय

संस्थान और ग्लोबल स्किल्स पार्क के मध्य समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित

संस्थान ने संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क के साथ महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए, जिसका मुख्य उद्देश्य शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा देना है। शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने की दिशा में यह साझेदारी अनुभवों के आदान-प्रदान, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, विद्यार्थियों के लिए इंटरशिप और नई तकनीकों पर केंद्रित कार्यक्रमों के आयोजन को प्रोत्साहित करेगी। इसके अतिरिक्त, संसाधनों के साझा उपयोग, वर्कशॉप्स व सेमिनार, संयुक्त अनुसंधान, और पीएचडी फेलोशिप जैसी कई पहलों की भी शुरुआत की जाएगी। इस समझौते पर संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी और ग्लोबल स्किल्स पार्क के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) श्री गिरीश शर्मा ने हस्ताक्षर किए। कार्यक्रम में मध्य प्रदेश सरकार के कौशल विकास एवं रोजगार मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. गौतम टेटवाल ने भी गरिमामयी

उपस्थिति दर्ज कराई। एमओयू एक्सचेंज का कार्य निटर भोपाल के डीन कॉर्पोरेट एंड इंटरनेशनल रिलेशन्स प्रो. पी.के. पुरोहित एवं प्रो. पराग दुबे द्वारा संपन्न किया गया। इस अवसर पर डॉ. टेटवाल ने कहा कि ग्लोबल स्किल्स पार्क में युवाओं को विश्वस्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिल रहा है। ग्लोबल स्किल्स पार्क के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) श्री गिरीश शर्मा ने संस्थान की सराहना करते हुए कहा कि निटर भोपाल एक उत्कृष्ट राष्ट्रीय संस्थान है जिसके साथ जुड़ना निसंदेह विद्यार्थियों के कौशल विकास में एक नया आयाम जोड़ेगा। यह समझौता दोनों संस्थानों के बीच शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार आधारित सहयोग को मजबूती देगा और विद्यार्थियों को तकनीकी दक्षता के साथ वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करने में एक अहम भूमिका निभाएगा।



संस्थान में हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड और उद्योगों की महत्वपूर्ण बैठक संपन्न

संस्थान में एक महत्वपूर्ण औद्योगिक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल), नासिक, बेंगलोर एवं लखनऊ के वरिष्ठ अधिकारियों सहित मध्यप्रदेश के कई औद्योगिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इस बैठक का उद्देश्य तकनीकी शिक्षा, उद्योगों और रक्षा क्षेत्र के बीच परस्पर सहयोग और समन्वय को बढ़ावा देना तथा 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' जैसे राष्ट्रीय अभियानों को गति देना था। इस बैठक की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. सी.सी. त्रिपाठी ने कहा कि संस्थान सदैव से तकनीकी शिक्षा और उद्योगों के बीच एक मजबूत सेतु की भूमिका निभाता आया है। हम सभी ने हाल की स्थितियों में भारत को आत्मनिर्भर एवं विकसित बनाने की दिशा में देश में बने हुए सैन्य उपकरणों की क्षमता को देखा है। जिसपर हम सभी भारतीय गौरवान्वित महसूस करते हैं। भोपाल में जल्द ही हम सभी सैन्य उपकरणों के कंपोनेंट्स बनते हुए देखेंगे। हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड नासिक के डीजीएम, श्री जावेद अली ने इंडस्ट्री के प्रतिनिधियों से कहा कि आप सभी अपने उद्योगों में सैन्य उपकरणों

के कंपोनेंट्स बना कर आत्मनिर्भर भारत एवं मेक इन इंडिया में योगदान दे सकते हैं। आज हमारे पास स्वदेशी उपकरण बनाने के सभी संसाधन भारत में उपलब्ध हैं। हाल में हुए "ऑपरेशन सिन्दूर" में हमारे द्वारा बनाये गये उपकरणों ने अपना कमाल दिखाया है, हमें इस टीम का भाग होने पर गर्व है। हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड एवं उद्योग प्रतिनिधियों ने संस्थान के उत्कृष्टता केंद्र की 11 उच्च तकनीकी प्रयोगशालों का भ्रमण भी किया। संस्थान के डीन कॉर्पोरेट एंड इंटरनेशनल रिलेशन्स प्रो. पी.के. पुरोहित ने इस बैठक की जानकारी देते हुए बताया कि सैन्य उपकरणों हेतु आवश्यक कंपोनेंट्स की आपूर्ति सुनिश्चित करने एवं नए औद्योगिक उपकरणों को तैयार करने के उद्देश्य से कंपोनेंट्स प्रदर्शित किये गये। इंडस्ट्री एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री राजीव अग्रवाल ने भोपाल की वर्तमान औद्योगिक क्षमताओं एवं हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड के आपसी समन्वयन की संभवनाओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्री आर.के. भारती, श्री पी.आर. बघेल, प्रो. एम.ए. रिजवी, प्रो. अजय शंकर, मेजर निशांत ओझा एवं विभिन्न उद्योगों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।



फार्मेसी के क्षेत्र में भी शोध व प्रशिक्षण करेगा संस्थान नाईपर अहमदाबाद के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित

संस्थान ने नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, (नाईपर) अहमदाबाद के साथ महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए, जिसका मुख्य उद्देश्य शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा देना है। इस सहयोग से न केवल तकनीकी और औषधीय शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्टता को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि विभिन्न बहु-विषयक क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान को भी गति मिलेगी। एमओयू के अंतर्गत, दोनों संस्थान संयुक्त कार्यशालाएं, सेमिनार, फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम, शोधकर्ताओं के लिए इंटरनशिप और अनुसंधान आधारित गतिविधियों का आयोजन करेंगे। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. सी. सी. त्रिपाठी ने कहा कि आज फार्मास्यूटिकल क्षेत्र एक गहन तकनीकी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा

है। ऑटोमेशन, एआई-आधारित अनुसंधान और डेटा-संचालित निर्णय अब इस क्षेत्र की अनिवार्यता बन चुके हैं। हमारी यह साझेदारी नाईपर जैसे अग्रणी संस्थान को तकनीकी दक्षताओं और स्थानांतरणीय कौशलों के साथ सशक्त बनाएगी। इससे नवाचार की गति और अधिक तीव्र होगी। नाईपर अहमदाबाद के निदेशक प्रो. शैलेन्द्र सराफ ने कहा कि आज के तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में उच्च शिक्षण संस्थानों को पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकल कर 'आउट-ऑफ-द-बॉक्स' सोच अपनाने की आवश्यकता है। संस्थान इस तरह के कार्यों में अग्रणी रहा है। इस अवसर पर संस्थान के डीन कॉर्पोरेट एंड इंटरनेशनल रिलेशन्स प्रो. पी.के. पुरोहित व प्रो. बशीरुल्लाह शेख उपस्थित थे।



संस्थान और एमवीएच पैकेजिंग के बीच तकनीकी सहयोग हेतु एमओयू पर हस्ताक्षर प्रतिस्पर्धा को अवसर में बदलना नवाचार की दिशा में पहला कदम: – प्रो. सी.सी. त्रिपाठी



संस्थान और एमवीएच पैकेजिंग के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गये जिसका मुख्य उद्देश्य दोनों पक्षों के तकनीकी विशेषज्ञता, संसाधनों और नवाचारों के साझाकरण को बढ़ावा देना है, ताकि दोनों संस्थान उद्योग-प्रासंगिक प्रशिक्षण, उत्पाद नवाचार और अनुसंधान कार्यों में परस्पर सहयोग कर सकें। इस सहयोग के अंतर्गत तकनीकी प्रशिक्षण, प्रोजेक्ट बेस्ड टेक्निकल सपोर्ट, स्वदेशी तकनीक के माध्यम से रिवर्स इंजीनियरिंग, साथ ही कुशल मानव संसाधन को इंडस्ट्री के अनुकूल तैयार करना जैसे कई महत्वपूर्ण बिंदु शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, यह समझौता संसाधनों के साझा उपयोग, वर्कशॉप्स एवं सेमिनार, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, विद्यार्थियों के लिए इंटरनशिप, और नई तकनीकों पर केंद्रित कार्यक्रमों के आयोजन को भी बढ़ावा देगा। संस्थान में हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) और अन्य मानकों के अनुरूप एक आधुनिक हीट ट्रीटमेंट प्लांट की स्थापना एवं संचालन के लिए भी सहयोग किया जाएगा। यह सुविधा दोनों संस्थानों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ-साथ एमवीएच पैकेजिंग की उत्पादन आवश्यकताओं को भी पूरा करेगी, जिससे गुणवत्ता और दक्षता में

सुधार होगा। इस महत्वपूर्ण समझौते पर संस्थान निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी और एमवीएच पैकेजिंग के श्री सी.एस. व्योम अरोड़ा ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि हम दृढ़ विश्वास करते हैं कि इस साझेदारी से दोनों पक्ष प्रतिस्पर्धा को अवसर में बदलते हुए नई तकनीकों को अपनाने और लागू करने के बेहतर अवसर प्राप्त करेंगे। श्री सी.एस. व्योम अरोड़ा ने कहा कि इस कोलैबोरेशन के माध्यम से हम कार्य को अधिक आसान, प्रभावी और गुणवत्ता-आधारित बनाने में सक्षम होंगे। इस साझेदारी से हमें नवीनतम तकनीकी संसाधनों का लाभ मिलेगा, जिससे हमारी उत्पादन प्रक्रियाएं और भी अधिक प्रतिस्पर्धी और उन्नत होंगी। संस्थान के डीन कॉर्पोरेट एंड इंटरनेशनल रिलेशनस, प्रो. पी.के. पुरोहित ने बताया कि यह समझौता ज्ञापन दोनों संस्थानों के बीच तकनीकी प्रशिक्षण से लेकर आधुनिक तकनीकी प्रक्रियाओं के विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान और संसाधनों के आदान-प्रदान के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस अवसर पर श्री राकेश डावर, श्री आर.के. भारती, प्रो. रवि गुप्ता, प्रो. एल.एस. राजू उपस्थित थे।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस योग एवं ध्यान सत्रों का आयोजन

संस्थान में 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग एवं ध्यान विषय पर विशेष सत्रों का आयोजन प्रसिद्ध योग एवं ध्यान प्रशिक्षक श्री एस. के. राजीव नायर द्वारा किया गया। 20 एवं 21 जून को आयोजित तीन सत्रों में संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों, प्रशिक्षुओं एवं उनके परिवारजनों ने भाग लिया। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण श्री नायर का प्रेरणादायक व्याख्यान रहा, जिसका विषय "योग एवं ध्यान के माध्यम से मानव हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का नवोत्थान" था। उन्होंने अपने प्रेरणादायक व्याख्यान में बताया कि जैसे कोई मशीन आंतरिक और बाह्य रूप से समन्वित होकर कार्य

करती है, वैसे ही मानव शरीर और मस्तिष्क का संतुलन भी योग और ध्यान के अभ्यास से ही संभव है। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. सी. सी. त्रिपाठी ने कहा कि यह केवल योग दिवस नहीं, बल्कि भारतीय जीवन दर्शन की गहराई को अनुभव करने का अवसर है। योग और ध्यान जैसी विधाएं केवल शरीर की नहीं, बल्कि चेतना की भी शुद्धि करती हैं। संस्थान सदैव भारतीय परंपरागत ज्ञान प्रणाली को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर उसे सशक्त बनाने का कार्य करता रहा है। संस्थान भविष्य में भी ऐसी पहल कर भारतीय जीवन मूल्यों एवं सतत् स्वास्थ्य प्रणाली को प्रोत्साहित करता रहेगा।



राजभाषा गतिविधियां

संस्थान में राजभाषा और जनसंपर्क को समर्पित प्रकोष्ठ का उद्घाटन

मातृभाषा और संस्कृति से जुड़े रहना केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक सौभाग्य भी है:-

श्रीमती वंदना त्रिपाठी

संस्थान में राजभाषा एवं जनसंपर्क प्रकोष्ठ के नवीन कक्ष का विधिवत उद्घाटन हिंदी लेखिका श्रीमती वंदना त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्रीमती वंदना त्रिपाठी ने कहा कि मातृभाषा और संस्कृति से जुड़े रहना केवल एक औपचारिक दायित्व नहीं, बल्कि एक सौभाग्य है, जो हमें हमारी जड़ों, पहचान और आत्मगौरव से जोड़ता है। संस्थान द्वारा हिंदी भाषा के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु किया गया यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। संस्थान के निदेशक डॉ. सी.सी. त्रिपाठी ने कहा कि राजभाषा एवं जनसंपर्क प्रकोष्ठ का यह नवीन कक्ष और इसके साथ निर्मित वीथिका मातृभाषा और विरासत के संरक्षण की दिशा में मजबूत कदम है। यह परिसर हमें न केवल हमारी राजभाषा हिंदी में रचे गए इतिहास से जोड़ता है, बल्कि हमें उस गौरवशाली परंपरा का साक्षी भी बनाता है। उल्लेखनीय है कि संस्थान राजभाषा संबंधित अनुदेशों के पालन करने में हमेशा से अग्रणी रहा है एवं

संस्थान के कार्यों को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार एवं सराहना प्राप्त हुई है। इस अवसर पर संस्थान की 26 वर्षों से निकल रही राजभाषा पत्रिका "संपर्क सरिता" के नये अंक का विमोचन भी किया गया। नवीन कक्ष के साथ-साथ राजभाषा एवं जनसंपर्क गतिविधियों पर आधारित एक विशेष वीथिका का भी निर्माण किया गया है। इसमें संस्थान की राजभाषा नीति, हिंदी प्रचार-प्रसार, समाचार पत्रों में प्रकाशित संस्थान की प्रमुख उपलब्धियों एवं गतिविधियों को समर्पित चित्रात्मक और दस्तावेजीय प्रस्तुतियाँ प्रदर्शित की गई हैं। यह वीथिका आगंतुकों को हिंदी भाषा की प्रासंगिकता और संस्थान की भाषिक चेतना से परिचित कराएगी। इस अवसर पर संस्थान के डीन प्रो. आर.के. दीक्षित, प्रो. पी. के. पुरोहित, मेजर निशांत ओझा, श्री गौतम कुमार, श्रीमती बबली चतुर्वेदी सहित राजभाषा एवं जनसंपर्क प्रकोष्ठ के समस्त सदस्य उपस्थित थे।



हिंदी को सशक्त बनाने के लिए संस्थान सदैव प्रतिबद्ध राजभाषा संरक्षण हमारे संस्थान की प्राथमिकता है - प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

संस्थान की राजभाषा समिति के सदस्यों के साथ बैठक में निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने संस्थान की राजभाषा हिंदी के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता और उत्कृष्ट कार्य हेतु संस्थान को विभिन्न स्तर पर पुरस्कार एवं सराहना मिलने पर समस्त सदस्यों को बधाई एवं शुभकामनायें दी। गत एक वर्ष में संस्थान को राजभाषा क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु पांच पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। संस्थान को केरल के राज्यपाल माननीय श्री राजेंद्र विश्वनाथ अल्लेकर के कर कमलों द्वारा तीन पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिन्हें संस्थान के प्रतिनिधि के रूप में डॉ. पुरोहित द्वारा प्राप्त किया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष के रूप में निभाए गए महत्वपूर्ण योगदान और हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रेरणादायी नेतृत्व हेतु “राजभाषा मनीषी सम्मान” एवं प्रो. पी. के. पुरोहित डीन स्कूल ऑफ

साइंसेज एवं राजभाषा समन्वयक को हिंदी में वैज्ञानिक विषयों पर उनके उत्कृष्ट व्याख्यान, पुस्तक लेखन एवं 26 वर्षों से निरंतर प्रकाशित हो रही संस्थान की राजभाषा पत्रिका ‘संपर्क सरिता’ के संपादक के रूप में उल्लेखनीय योगदान के लिए “राजभाषा विज्ञान रत्न” से पुरस्कृत किया गया है। इस अवसर पर निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान हमारे संस्थान की हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का सम्मान है। संस्थान हिंदी भाषा को एक सशक्त माध्यम बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। हम आगे भी हिंदी के विकास और समृद्धि के लिए अपने प्रयास जारी रखेंगे। इस अवसर पर संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ के सदस्य प्रो. आर.के. दीक्षित, श्री निशांत ओझा, श्री संजय त्रिपाठी एवं श्रीमती बबली चतुर्वेदी उपस्थित थीं।



राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न

हिंदी में प्रशासनिक अभिलेखन को मिले गति – समिति के सुझावों पर हुआ विस्तृत विमर्श

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता संस्थान के राजभाषा समन्वयक डॉ. पी.के. पुरोहित द्वारा की गई। इस बैठक का उद्देश्य संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन, कार्यालयीन कार्यों में उसकी सहभागिता बढ़ाने, और दैनिक कार्यालयीन क्षेत्र में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के उपायों पर विस्तृत चर्चा करना था। राजभाषा समन्वयक डॉ. पी.के. पुरोहित ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि संस्थान सदैव प्रयासरत है कि भाषा ज्ञान का अवरोध नहीं, बल्कि संवाहक बने। राजभाषा का कार्य केवल एक प्रशासनिक दायित्व नहीं, बल्कि यह हमारी बौद्धिक और सांस्कृतिक उत्तरदायित्व की अभिव्यक्ति है। उन्होंने यह भी बताया कि संस्थान को राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं द्वारा पाँच प्रतिष्ठित राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। यह उपलब्धि संस्थान के

राजभाषा क्रियान्वयन की गुणवत्ता और प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस बैठक में कार्यालयीन कार्यों में हिंदी प्रयोग की समीक्षा, द्विभाषी पत्राचार, हिंदी पखवाड़ा 2025 की रूपरेखा, बैठकों को तय समयसीमा में सुनिश्चित करना, राजभाषा में संकाय व गैर हिंदी भाषी कर्मचारियों हेतु कार्यशालों व संगोष्ठीयों का आयोजन, हिंदी में ई-ऑफिस, नोटिंग-ड्राफ्टिंग और फाइल संधारण को बढ़ावा देने जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में सभी सदस्यों ने अपने-अपने विभागों में राजभाषा उपयोग बढ़ाने के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत किए। बैठक में विभिन्न विभागों के प्रतिनिधि, संकाय सदस्य, राजभाषा प्रकोष्ठ के सदस्यगण तथा राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे।



राजभाषा समन्वयक प्रो. पुरोहित राजभाषा विज्ञान रत्न से अलंकृत



संस्थान के डीन, प्रोफेसर पी. के. पुरोहित को "राजभाषा विज्ञान रत्न पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हें विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी के लोकव्यापीकरण, राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को हिंदी में प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने तथा हिंदी में कई महत्वपूर्ण पुस्तकों के लेखन हेतु प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उन्हें 44वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर केरल में आयोजित भव्य समारोह में प्रदान किया गया। इस अवसर पर केरल के महामहिम राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने प्रो. पुरोहित को यह सम्मान अपने कर-कमलों से प्रदान किया। समारोह का आयोजन भारतीय भाषा एवं संस्कृति केंद्र, नई दिल्ली द्वारा किया गया था।

संस्थान को दो अन्य राजभाषा पुरस्कार में निदेशक प्रो सी सी त्रिपाठी को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष का दायित्व निभाते हुए राजभाषा के प्रति विभिन्न कार्यालयों को प्रेरित करने एवं हिन्दी के प्रचार प्रसार में महती भूमिका निभाने के लिए "राजभाषा मनीषी" सम्मान, संस्थान की राजभाषा हिंदी पत्रिका संपर्क सरिता के लगातार 25 वर्षों तक प्रकाशन पर "राजभाषा दिगंत सम्मान से सम्मानित किया है। प्रो. पुरोहित ने संस्थान का प्रतिनिधित्व करते हुए सम्मेलन में भाग लिया और तीनों पुरस्कार प्राप्त किए। उनके अनुसार, यह पुरस्कार न केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि पूरे संस्थान की वर्षों की समर्पित प्रयासों का प्रतीक भी है।

"टिप्पण एवं प्रारूपण" विषय पर कार्यशाला का आयोजन

संस्थान में राजभाषा प्रकोष्ठ व नराकास के तत्वाधान में दिनांक 12 जून 2025 को 'टिप्पण एवं प्रारूपण' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ श्री भारत भूषण देशमुख, राजभाषा अधिकारी, आइसर भोपाल थे। इस कार्यशाला का उद्देश्य शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यों में टिप्पण (Noting) और प्रारूपण (Drafting) की प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझाना, उसे व्यावहारिक दृष्टिकोण से सिखाना, और प्रतिभागियों

को संचार तथा दस्तावेज-निर्माण की नीतियों से परिचित कराना था। कार्यशाला में प्रतिभागियों को वास्तविक केस स्टडी, नोटशीट प्रारूप, ज्ञापन लेखन, तथा पत्राचार के विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया। कार्यशाला में संस्थागत कर्मचारियों के साथ विभिन्न नराकास सदस्य कार्यालयों से कुल 54 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।



नराकास - राजभाषा कार्यशालाएं
01 जनवरी 2025 से 30 जून 2025 तक

क्र.	कार्यालय	विषय	दिनांक	विषय विशेषज्ञ
1.	केंद्रीय जल बोर्ड, भोपाल	एआई आधारित भारतीय अनुवाद उपकरण	15 जनवरी 25	श्री संजय त्रिपाठी
2.	कार्यालय अपर महानिदेशक दूरसंचार	तकनीकी माध्यमों में हिंदी का प्रयोग	13 फरवरी 25	श्री संजय त्रिपाठी
3.	एनआईटीटीटीआर, भोपाल	सरकारी सामाजिक प्रचार गतिविधियाँ	06-07 मार्च 2025	प्रो. आर. के. गुप्ता
4.	एनआईटीटीटीआर, भोपाल	भवन निर्माण एवं अनुरक्षण	18 मार्च 2025	प्रो. एम.सी. पालीवाल
5.	भारतीय खेल प्राधिकरण	कार्यालयीन कार्यों हिंदी भाषा का अनुप्रयोग	28 मार्च 25	श्रीमती शोभा लेखवानी
6.	मेनिट, भोपाल	हिंदी भाषा का अनुप्रयोग	04 अप्रैल 2025	श्रीमती शोभा लेखवानी
7.	भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण	आधुनिक हिंदी ई-टूल्स	16 मई 2025	श्री संजय त्रिपाठी
8.	कार्यालय अपर महानिदेशक दूरसंचार	निज भाषा उन्नति अहै: स्व भाषा का आग्रह	20 मई 2025	श्री संजय त्रिपाठी
9.	एनआईटीटीटीआर भोपाल	टिप्पण एवं प्रारूपण	12 जून 2025	श्री भारत भूषण देशमुख
10.	खादी ग्रामोद्योग, भोपाल	राजभाषा में हिंदी का अनुप्रयोग एवं टिप्पण लेखन	16 जून 2025	श्रीमती शोभा लेखवानी
11.	भारतीय खेल प्राधिकरण	हिंदी का विकास	27 जून 25	श्री संजय त्रिपाठी
12.	क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय	राजभाषा में कार्यालयीन कार्य एवं उसके अनुप्रयोग	27 जून 25	श्रीमती शोभा लेखवानी

नोट

संस्थान के कर्मचारी एवं उनके परिवार सदस्य जो अपना लेखन कौशल दिखाने में रुचि रखते हैं, उनसे अनुरोध है कि वे अपने लेख, कविताएँ, लघु कथाएँ राजभाषा सेल (rajbhashacell@nittrbpl.ac.in) को मेल करें।
आपकी प्रस्तुत प्रविष्टियाँ तदनुसार प्रकाशित की जाएँगी।

उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश के लिए संस्थान की अभिनव पहल

शिक्षकों को सशक्त करने के प्रयास का सहभागी बनेगा हमारा संस्थान: प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

संस्थान द्वारा मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा विभाग के प्राध्यापकों, प्राचार्यों, पुस्तकालयाध्यक्षों एवं प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए हैं। संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने इस उपलब्धि पर कहा कि उच्च शिक्षा विभाग की दूरदर्शिता के फलस्वरूप इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से प्रदेश के शैक्षिक मानकों को सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। इन कार्यक्रमों से न केवल मध्य प्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग के शैक्षणिक व गैर-शैक्षणिक सदस्यों की क्षमता में वृद्धि हो रही है, बल्कि आधुनिक शैक्षणिक तकनीकों, गुणवत्ता के मानकों, डिजिटल लिटरेसी एवं शैक्षणिक नेतृत्व को अपनाने का मार्ग भी प्रशस्त हुआ है। भविष्य में भी ऐसे उपयोगी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन से प्रदेश के शिक्षकों को समयानुसार उन्नत और प्रभावशाली शिक्षण पद्धतियों से सशक्त किया जा सकेगा और हमारा संस्थान इस प्रयास का सहभागी बनेगा। संस्थान के डीन कॉर्पोरेट एंड इंटरनेशनल रिलेशन्स प्रो. पी.के. पुरोहित ने बताया कि उच्च शिक्षा विभाग हेतु हमारे संस्थान द्वारा अगस्त माह तक कुल 35 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में "एकेडेमिक लीडरशिप डेवलपमेंट फॉर गवर्नेंस एंड मैनेजमेंट ऑफ़ द

इंस्टिट्यूट" विषय पर 02 प्रोग्राम, जिनमें प्रधानमंत्री उत्कृष्ट एवं स्वशासी महाविद्यालयों के 65 प्राचार्यों ने, "मॉडर्न लाइब्रेरीज एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज" विषय पर 45 ग्रंथपलों ने, 12 दिवसीय रिक्रेशर कार्यक्रम में कुल 55 सहायक प्राध्यापकों ने, "साइंस फॉर इंजीनियरिंग एप्लीकेशन" विषय पर 03 प्रोग्राम में 111 सहायक प्राध्यापकों ने, "ऑपरेशन एंड मेंटेनेंस ऑफ़ लैब एक्वूपमेंट्स" विषय पर 42 प्रयोगशाला तकनीशियनों, "मैनेजरियल स्किल्स एंड प्रोफेशनल एथिक्स" विषय पर 37 सहायक प्राध्यापकों ने, "21 सेंचुरी कम्युनिकेशन थ्रू डिजिटल मोड" विषय पर 42 सहायक प्राध्यापकों सहित कुल 397 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आगामी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्राचार्यों के लिए 10 प्रशिक्षण कार्यक्रम "यूज ऑफ़ टेक्नोलॉजी फॉर आउटकम बेस्ड एजुकेशन" विषय पर, 05 "इंस्टिट्यूट डेवलपमेंट प्लान" विषय पर, 05 "भारतीय ज्ञान परंपरा" विषय पर, एवं 05 अन्य विषयों पर अगस्त माह तक आयोजित किये जा रहे हैं, जिनमें लगभग 350 प्राचार्य एवं 450 सहायक प्राध्यापक प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से उच्च शिक्षा विभाग के लगभग 1400 सदस्यों को प्रशिक्षित जायेगा। इसके अलावा 66 अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रूपरेखा पर भी कार्य जारी है।

“क्रय हेतु जेम पोर्टल का उपयोग” विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 09 से 13 जून, 2025 तक “क्रय हेतु जेम पोर्टल का उपयोग” विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को सरकारी ई-मार्केटप्लेस (GeM) पोर्टल के प्रभावी उपयोग तथा सामान्य वित्तीय नियमों (GFR) के अनुरूप खरीद प्रक्रियाओं की व्यावहारिक जानकारी प्रदान करना था। भारत सरकार की डिजिटल इंडिया पहल के अंतर्गत शुरू किए गए GeM पोर्टल ने सरकारी उपयोगकर्ताओं को वस्तुओं और सेवाओं की ऑनलाइन खरीद की सुविधा प्रदान कर पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और सुविधा सुनिश्चित की है। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को क्रय के मूल सिद्धांत, अधिकारियों की भूमिका और दायित्वों से परिचित कराया गया। प्रशिक्षण में डायरेक्ट पर्स, बिडिंग, रिवर्स ऑक्शन (RA), PAC और BOQ बिड्स जैसी विभिन्न खरीद विधियों पर विस्तृत चर्चा हुई।

इसके अतिरिक्त, सप्लायर वर्गीकरण, एमएसएमई प्रावधान, लागू कर व्यवस्था और श्रम कानूनों के अनुरूप मानव संसाधन की खरीद जैसे महत्वपूर्ण विषयों को भी शामिल किया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. हुसैन जीवाखान थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. अस्मिता ए. खजांची ने योगदान दिया।



साइंस फॉर इंजीनियरिंग एप्लिकेशन्स विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 21-30 अप्रैल, 2025 तक “साइंस फॉर इंजीनियरिंग एप्लिकेशन्स” विषय पर तीन कार्यक्रम आयोजित किये गए। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 101 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य था विज्ञान के महत्व को उजागर करना, जो न केवल मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करता है बल्कि जीवन की गुणवत्ता को भी बेहतर बनाता है। अनुप्रयुक्त विज्ञान, जो वैज्ञानिक ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग है, नई तकनीकों के विकास और वास्तविक समस्याओं के समाधान में सहायक होता है। जीवविज्ञान से लेकर इंजीनियरिंग तक के विविध क्षेत्रों को समाहित करते हुए, अनुप्रयुक्त विज्ञान का लक्ष्य प्रणालियों

में सुधार करना और दक्षता बढ़ाना है। यद्यपि इसके महत्व को कभी-कभी अनदेखा किया जाता रहा है, यह आधुनिक वैश्विक चुनौतियों के समाधान और आर्थिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम के प्रमुख विषयों में बहुविषयक शिक्षा (NEP 2020 के अनुरूप), वैज्ञानिकों की सामाजिक जिम्मेदारी, पर्यावरणीय समाधान, हरित प्रौद्योगिकियां, सेमीकंडक्टर अनुप्रयोग, नैनोसाइंस, परमाणु विज्ञान, लेजर तकनीक, तथा वैज्ञानिक सिद्धांतों को व्यावहारिक तकनीकों में परिवर्तित करने की प्रक्रिया शामिल थी। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. पी.के. पुरोहित, डॉ. हुसैन जीवाखान व डॉ. बशीरुल्ला



इंडक्शन प्रोग्राम आयोजित

संस्थान में अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 26 मई से 06 जून 2025 व 23 जून से 04 जुलाई 2025 तक दो इंडक्शन प्रोग्राम आयोजित किये गये। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 61 प्रतिभागियों ने भाग लिया। आर्थिक वैश्वीकरण, उद्योग 4.0 और डिजिटलीकरण के वर्तमान युग में तकनीकी शिक्षा को कई नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए शिक्षकों को न केवल विषय विशेषज्ञता, बल्कि प्रभावी शैक्षणिक रणनीतियों, कक्षा प्रबंधन एवं प्रयोगशाला निर्देशनों जैसे शैक्षणिक कौशल में भी दक्ष होना आवश्यक है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इंडक्शन प्रोग्राम (चरण-1) को एनईपी 2020 की अनुशंसा के अनुरूप डिज़ाइन किया गया था। इसका उद्देश्य नवप्रवेशी और अभ्यासरत शिक्षकों को उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण-अधिगम वातावरण तैयार करने हेतु आवश्यक शैक्षणिक कौशल और दृष्टिकोण से सुसज्जित करना है। जिससे वे प्रभावी रूप से कक्षा, प्रयोगशाला

और कार्यशाला जैसे विविध शिक्षण संदर्भों में कार्य कर सकें। यह कार्यक्रम शिक्षकों को शिक्षण की कला और सार्थक अधिगम की रणनीतियों से अवगत कराता है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. बशीरुल्ला शेख थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. सुमन पटनायक व डॉ. संजीत कुमार ने योगदान दिया।



इंजीनियरिंग संकाय हेतु अनुसंधान पद्धति व प्रस्ताव लेखन पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 16 से 20 जून, 2025 तक “इंजीनियरिंग अकादमियों के लिए अनुसंधान पद्धति व प्रस्ताव लेखन” विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। वर्तमान शैक्षणिक एवं तकनीकी परिवेश में अनुसंधान, न केवल शिक्षक विकास का एक अभिन्न अंग बन गया है, बल्कि संस्थानों की प्रगति में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। आज के इंजीनियरिंग शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वे शिक्षण के साथ-साथ गुणवत्ता पूर्ण अनुसंधान में भी योगदान दें। विशेष रूप से आरंभिक कैरियर में शिक्षक प्रायः अनुसंधान समस्याओं की पहचान, उपयुक्त पद्धतियों के चयन तथा प्रभावी प्रस्ताव लेखन में कठिनाइयों का सामना करते हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को अनुसंधान पद्धति और प्रस्ताव लेखन से जुड़ी बुनियादी तथा व्यावहारिक क्षमताएं प्रदान करना था। कार्यक्रम में अनुसंधान की योजना, क्रियान्वयन और

प्रभावी संप्रेषण जैसे पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया, जो शैक्षणिक संस्थानों और विभिन्न फंडिंग एजेंसियों की अपेक्षाओं के अनुरूप हैं। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. बशीरुल्ला शेख थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. पी.के. पुरोहित ने योगदान दिया।



इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग

रचनात्मक शिक्षण कौशल विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग विभाग व बिरला विश्वकर्मा महाविद्यालय इंजीनियरिंग कॉलेज, आनंद, गुजरात द्वारा दिनांक 26 से 30 मई 2025 तक "रचनात्मक शिक्षण कौशल" विषय पर पाँच दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 42 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को रचनात्मकता आधारित शिक्षण पद्धतियों, डिजिटल संसाधनों और आधुनिक तकनीकों के प्रयोग से प्रभावशाली शिक्षण हेतु सशक्त बनाना था। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को रचनात्मकता की

अवधारणा, इसके लाभ एवं बाधाएँ, अधिगम सिद्धांत, ई-सामग्री विकास, MOOC निर्माण, व्यावसायिक नैतिकता, कॉपीराइट और CC लाइसेंसिंग, केस स्टडी, रचनात्मक प्रयोगशाला अनुभव, सक्रिय अधिगम रणनीतियाँ तथा शिक्षण एवं मूल्यांकन में AI और डिजिटल टूल्स के उपयोग जैसे विषयों पर विस्तारपूर्वक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. सी. एस. राजेश्वरी थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. अंजली पोतनीस ने योगदान दिया।



ड्रोन बेसिक्स पर आयोजित कार्यशाला

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग विभाग व बिर्योन्ड ग्रेविटी, एविएशन इंस्टिट्यूट, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 23 से 25 अप्रैल 2025 तक "ड्रोन बेसिक्स" विषय पर कार्यशाला आयोजित की गयी। इस कार्यक्रम में 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिनमें भोपाल एस. वी. पॉलिटेक्निक, शासकीय महिला पॉलिटेक्निक भोपाल, एवं क्षेत्रीय विद्यालयों के विद्यार्थी सम्मिलित थे। इस कार्यशाला का उद्देश्य छात्रों को ड्रोन टेक्नोलॉजी के मूलभूत सिद्धांतों, कार्यविधि तथा उसके विभिन्न अनुप्रयोगों से परिचित कराना था। कार्यशाला के दौरान विद्यार्थियों को बिर्योन्ड ग्रेविटी,

एविएशन इंस्टिट्यूट की अत्याधुनिक ट्रेनिंग लैब एवं एविएशन साइट का भ्रमण कराया गया, जहाँ उन्होंने ड्रोन के विभिन्न घटकों, असेंबली, उड़ान तकनीक एवं नियंत्रण प्रणाली का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया। इस अवसर पर संस्थान के माननीय निदेशक महोदय ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए उन्हें इस नवाचार-प्रधान क्षेत्र में करियर निर्माण के लिए प्रेरित किया। उन्होंने ड्रोन तकनीक के बढ़ते उपयोग और इससे जुड़ी संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए युवाओं से इस क्षेत्र में आगे आने का आह्वान किया। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजली पोतनीस थी।



डिजाइन एंड मॉडलिंग ऑफ़ आईओटी सिस्टम पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग विभाग द्वारा विस्तार केन्द्र अहमदाबाद में दिनांक 12 से 16 मई 2025 तक "डिजाइन एंड मॉडलिंग ऑफ़ आईओटी सिस्टम" विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स (IoT) की उन्नत तकनीकों से परिचित कराना तथा उन्हें व्यावहारिक रूप से प्रशिक्षित करना था। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. संजीत कुमार थे।



कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग

एडवांस पेडागॉजी पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग विभाग द्वारा दिनांक 23 से 27 जून 2025 तक "उन्नत शिक्षाशास्त्र (एडवांस पेडागॉजी)" विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन प्रक्रियाओं में नवाचार और तकनीक का समावेश कर विद्यार्थियों के लिए एक समृद्ध एवं प्रभावशाली अधिगम अनुभव सुनिश्चित करना तथा शिक्षकों को अधिक संतोषजनक और प्रभावी

शिक्षण अनुभव प्रदान करना था। संस्थान द्वारा संचालित इस नवाचार-आधारित कार्यक्रम का उद्देश्य वर्तमान में कार्यरत शिक्षकों को नई शिक्षण विधाओं (Reskilling/Up-skilling) से लैस करना है, ताकि वे तकनीकी एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षण की गुणवत्ता को और बेहतर बना सकें। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. संजय अग्रवाल थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. सचिन तिवारी ने योगदान दिया।



आउटकम बेस्ड एजुकेशन एंड करिकुलम पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग विभाग द्वारा दिनांक 19 से 23 मई 2025 तक "आउटकम बेस्ड एजुकेशन एंड करिकुलम" विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को सीखने पर केंद्रित, मापनीय एवं लक्ष्य-उन्मुख शिक्षा प्रणाली के सफल क्रियान्वयन हेतु आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करना था। कार्यक्रम में शैक्षिक उद्देश्यों की स्पष्टता, मूल्यांकन रणनीतियाँ, तथा पाठ्यक्रम का परिणामों के साथ संरेखण जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर विशेष बल दिया गया। कार्यक्रम के माध्यम से प्रतिभागियों को यह सिखाया गया कि कैसे परिणाम-आधारित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, जिससे शिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि हो सके। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. संजय अग्रवाल थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. आर. के. कपूर ने योगदान दिया।



इंडक्शन प्रोग्राम फेज-I आयोजित

संस्थान के कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग विभाग द्वारा दिनांक 14 से 25 अप्रैल 2025 तक व 16 से 27 जून 2025 तक दो "इंडक्शन प्रोग्राम फेज-I" आयोजित किये गये। इस कार्यक्रम में बिहार राज्य के इंजीनियरिंग कॉलेजों से कुल 69 शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य हालिया वर्षों में तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के राष्ट्रीय एजेंडे के अनुरूप, शिक्षण पेशेवरों की क्षमताओं में विकास करना था। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 की सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए पुनःडिज़ाइन किया गया है, जो शिक्षकों को नवीन शिक्षाशास्त्रीय कौशल प्रदान

करने पर केंद्रित है। कार्यक्रम के अंत में माइक्रो-टीचिंग प्रैक्टिस सत्र का आयोजन भी किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को व्यावहारिक अभ्यास का अवसर मिला। अप्रैल माह के कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. आर. के. कपूर थे व संकाय सदस्य के रूप में प्रो. एस. एस. मैथ्यू, डॉ. सी. एस. राजेश्वरी एवं प्रो. संजीत कुमार ने योगदान दिया। जून माह के कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एम.ए. रिजवी थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. आर. पी. खंभायत, डॉ. विपिन कुमार त्रिपाठी व प्रो संजीत कुमार ने योगदान दिया।



तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा विभाग

डिजिटल मोड के माध्यम से 21वीं सदी का संचार पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग द्वारा दिनांक 07 से 12 अप्रैल 2025 तक “डिजिटल मोड के माध्यम से 21वीं सदी का संचार (ऐप्स और गैजेट्स)” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 46 प्रतिभागियों ने भाग लिया। आज के समय में यह आवश्यक हो गया है कि शिक्षा को डिजिटल रूप से सक्षम और शिक्षार्थी-केंद्रित मोड की दिशा में निर्देशित किया जाए। 21वीं सदी के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण — जैसे संचार कौशल, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान, नेतृत्व क्षमता और टीम वर्क कौशल — अब शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं। इस परिवेश में शिक्षक की

भूमिका भी बदल रही है। वे अब केवल ज्ञान प्रदान करने वाले नहीं हैं, बल्कि वे सहयोगी, मार्गदर्शक, प्रशिक्षक, सुविधाप्रदाता और संरक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं। विद्यार्थियों के पास आज सीखने के असीमित साधन उपलब्ध हैं। इस कारण आवश्यक हो गया है कि शिक्षकों और शैक्षणिक प्रणालियों द्वारा छात्रों में आवश्यक ज्ञान और कौशल को प्रभावी रूप से विकसित करने के लिए आईसीटी-एकीकृत शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं को अपनाया जाए। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजना तिवारी थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. अस्मिता खजांची व डॉ. सुमन पटनायक ने योगदान दिया।

पर्यटन एवं आतिथ्य प्रबंधन के लिए कौशल विकास पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग द्वारा दिनांक 21 से 24 अप्रैल 2025 तक “पर्यटन एवं आतिथ्य प्रबंधन के लिए कौशल विकास” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया। पर्यटन और आतिथ्य उद्योग आज वैश्विक स्तर पर तेजी से विकसित होने वाला क्षेत्र है, जो न केवल रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, बल्कि आर्थिक प्रगति का भी

एक प्रमुख स्तंभ बन चुका है। इस क्षेत्र की बदलती आवश्यकताओं को समझते हुए, इस कार्यक्रम का उद्देश्य तकनीकी एवं उच्च शिक्षा से जुड़े शिक्षकों को आधुनिक ज्ञान, उद्योग-उपयोगी कौशल और शिक्षण प्रौद्योगिकी से लैस करना था, जिससे वे छात्रों को अधिक प्रभावी और समसामयिक रूप से प्रशिक्षित कर सकें। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजना तिवारी थी।

इंडक्शन प्रोग्राम फेज-II आयोजित

संस्थान के तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग द्वारा अहमदाबाद विस्तार केंद्र में दिनांक 16 से 20 जून 2025 तक “इंडक्शन प्रोग्राम फेज-II” आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण प्रौद्योगिकियों और व्यावसायिक नैतिकता से लैस कर, उन्हें एक प्रभावी, डिजिटल रूप से सक्षम और शिक्षार्थी-केंद्रित वातावरण प्रदान करने हेतु तैयार करना था। बदलते शैक्षणिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए, कार्यक्रम को इस प्रकार संरचित किया गया कि प्रतिभागी तकनीकी उपकरणों, इनोवेटिव पद्धतियों, और समकालीन शैक्षिक दृष्टिकोणों को व्यवहार

में ला सकें। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. राजेश खंभायत थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. निशीथ दुबे ने योगदान दिया।



मेटलैब के साथ नियंत्रण प्रणाली विश्लेषण एवं डिजाइन पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग द्वारा दिनांक 19 से 23 मई 2025 तक “मेटलैब के साथ नियंत्रण प्रणाली विश्लेषण एवं डिजाइन” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया। आज के तीव्र गति से बदलते तकनीकी परिदृश्य में नियंत्रण प्रणालियाँ विनिर्माण, रोबोटिक्स, एयरोस्पेस, ऑटोमोटिव और पावर सिस्टम जैसे क्षेत्रों में स्वचालन, स्थिरता और दक्षता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस प्रशिक्षण

कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को नियंत्रण प्रणाली डिजाइन और विश्लेषण की मूल अवधारणाओं, गणितीय मॉडलिंग, स्थानांतरण फंक्शन, ब्लॉक सरलीकरण, मेसन के लाभ सूत्र, उच्च-क्रम प्रणालियों के विश्लेषण तथा स्थिरता मानदंडों की गहन समझ प्रदान करना था। कार्यक्रम में मेटलैब सॉफ्टवेयर का प्रयोग करते हुए प्रशिक्षणार्थियों को व्यावहारिक कौशल अर्जित करने का अवसर दिया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. रंजीत सिंह चौहान थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. सचिन तिवारी ने योगदान दिया।

शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया में रचनात्मकता पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग द्वारा दिनांक 19 से 23 मई 2025 तक “शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया में रचनात्मकता” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को इस बात के लिए सक्षम बनाना था कि वे कक्षा में रचनात्मकता को प्रोत्साहित कर सकें, जिससे छात्रों में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान, सहयोगात्मक कार्य, संप्रेषण कौशल, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सहानुभूति जैसे

महत्वपूर्ण जीवन-कौशल विकसित किए जा सकें। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को उच्च एवं तकनीकी शिक्षा कार्यक्रमों में रचनात्मकता के एकीकरण में आने वाली चुनौतियों, छात्रों एवं शिक्षकों में रचनात्मक चिंतन के विकास, तथा कक्षा-गतिविधियों की रचना व कार्यान्वयन जैसे विषयों पर गहन प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. राजेश खंभायत थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. अंजना तिवारी ने योगदान दिया।

उच्च शिक्षा में एनईपी, ओबीई, एनएचईक्यूएफ का एकीकरण पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग द्वारा दिनांक 09 से 13 जून 2025 तक “उच्च शिक्षा में एनईपी, ओबीई, एनएचईक्यूएफ का एकीकरण” विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न तकनीकी एवं उच्च शिक्षण संस्थानों से प्रतिभागियों ने सहभागिता की। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, आउटकम बेस्ड एजुकेशन (OBE) तथा नेशनल हायर एजुकेशन क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क (NHEQF) के प्रभावी क्रियान्वयन और आपसी समन्वय पर केंद्रित था। एनआईटीटीटीआर द्वारा तकनीकी शिक्षा में व्यावसायिक दक्षताओं को मजबूत करने तथा NSQF (नेशनल

स्किल क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क) के स्तर-5 और उससे ऊपर के उपयुक्त अल्पकालीन और दीर्घकालीन व्यावसायिक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों की पहचान, विकास और समावेशन की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण पहल थी। प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को उच्च एवं तकनीकी शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण में आने वाली चुनौतियाँ, संभावित क्षेत्र, तथा पाठ्यचर्या निर्माण की रणनीतियों पर व्यावहारिक दृष्टिकोण से मार्गदर्शन प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. राजेश खंभायत थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. अंजना तिवारी ने योगदान दिया।

इंडस्ट्री 4.0 में रोबोटिक्स पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग द्वारा दिनांक 16 से 20 जून 2025 तक “इंडस्ट्री 4.0 में रोबोटिक्स: विनिर्माण क्षेत्र में परिवर्तन की दिशा में एक क्रांति” विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न तकनीकी एवं उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम आधुनिक औद्योगिक परिदृश्य में रोबोटिक्स और स्वचालन के बढ़ते महत्व को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया था, जिसमें प्रतिभागियों को स्मार्ट फैक्ट्रियों, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), मशीन लर्निंग और डेटा एनालिटिक्स जैसी तकनीकों के साथ रोबोटिक्स के समन्वय की

भूमिका पर गहन प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इंडस्ट्री 4.0 की अवधारणा आज के प्रतिस्पर्धी औद्योगिक परिवेश में उत्पादन प्रक्रियाओं को अधिक अनुकूल, लचीला और सतत बनाने की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को उन्नत तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य में रोबोटिक्स के अनुप्रयोगों से परिचित कराना था, जिससे वे भविष्य के उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण एवं अनुसंधान गतिविधियों को रूप दे सकें। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. रंजीत सिंह थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. सचिन तिवारी ने योगदान दिया।

पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग

प्रभावी प्रश्न पत्र सेटिंग पर आयोजित कार्यशाला

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 22 मई 2025 को आर.आई.टी. राजारामनगर, महाराष्ट्र में “प्रभावी प्रश्न पत्र सेटिंग” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 163 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को प्रश्नपत्र निर्माण

की वैज्ञानिक, समावेशी और परिणामोन्मुखी विधियों से परिचित कराना था, ताकि मूल्यांकन प्रणाली को अधिक सटीक, उद्देश्यपरक और शिक्षण-अधिगम के अनुरूप बनाया जा सके। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले थी।



परिणाम आधारित शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 09 से 11 जून 2025 तक “परिणाम आधारित शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण में लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS), ऑनलाइन मूल्यांकन उपकरण, डेटा एनालिटिक्स, डिजिटल कंटेंट निर्माण और

ई-पेडागॉजी जैसे प्रमुख विषयों पर गहराई से चर्चा की गई, जिससे शिक्षकों को शिक्षण की गुणवत्ता सुधारने तथा छात्रों के अधिगम परिणामों का मूल्यांकन बेहतर तरीके से करने में मदद मिल सके। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. आर.के. दीक्षित, डॉ. एस. गणपति व डॉ. संजय अग्रवाल ने योगदान दिया।



परियोजनाओं, सेमिनार और औद्योगिक प्रशिक्षण के मूल्यांकन हेतु रूब्रिक्स के उपयोग पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 16 से 20 जून 2025 तक अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र (आई.यू.सी.टी.ई.) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सहयोग से “परियोजनाओं, सेमिनार और औद्योगिक प्रशिक्षण के मूल्यांकन के लिए रूब्रिक्स के उपयोग” विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 38 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में परियोजनाओं, सेमिनार एवं औद्योगिक प्रशिक्षण जैसे व्यावहारिक घटकों के निष्पक्ष और उद्देश्यपरक मूल्यांकन के लिए रूब्रिक्स के निर्माण, उपयोग एवं विश्लेषण पर गहन सत्र आयोजित किए गए। प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार की रूब्रिक्स – एनालिटिक, होलिस्टिक एवं परफॉर्मेंस आधारित – की संरचना, संकेतक निर्धारण, ग्रेडिंग स्केल और फीडबैक विधियों के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. आर.के. कपूर ने योगदान दिया।

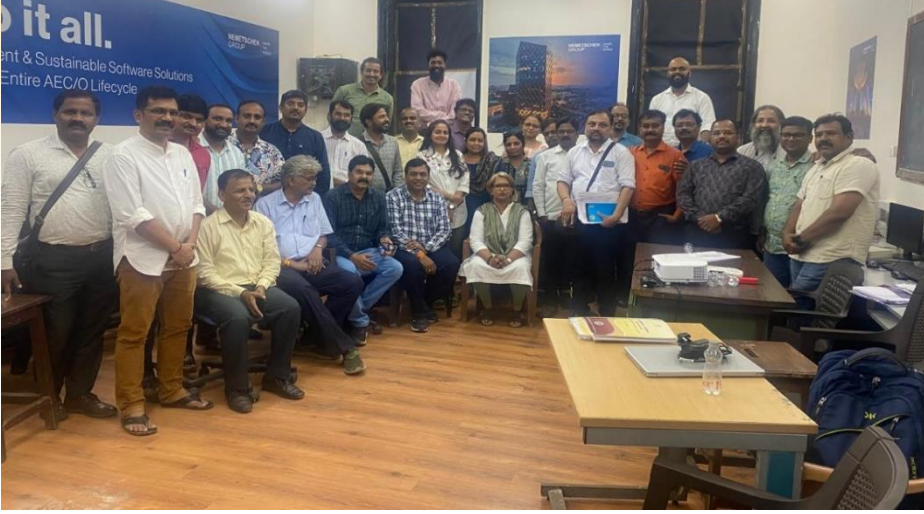


एम.एस.बी.ए.ई. परियोजना कार्यशालाओं का आयोजन

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 19 से 23 मई एवं 18 व 19 जून 2025 तक सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई में “एम.एस.बी.ए.ई. परियोजना कार्यशालाओं” का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में विभिन्न संस्थानों से 54 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य महाराष्ट्र राज्य बोर्ड ऑफ आर्ट एजुकेशन (एम.एस.बी.ए.ई.) के अंतर्गत संचालित 12 प्रमुख आर्ट डिप्लोमा कार्यक्रमों — जैसे फाउंडेशन,

डिप्लोमा इन एप्लाइड आर्ट, स्कल्प्चर एंड मॉडलिंग, टेक्सटाइल डिजाइन (प्रिंटिंग, डाइंग एवं वीविंग), सिरेमिक एंड पॉटरी, इंटीरियर डेकोरेशन, मेटल वर्क, आर्ट एजुकेशन आदि के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय क्रेडिट रूपरेखा 2023 के अनुरूप नवीन पाठ्यक्रम एवं संरचना का विकास करना था। इन कार्यशालाओं में प्रतिभागियों को करिकुलम डेवलपमेंट की प्रक्रिया, संरचना, लेवल डिस्क्रिप्टर, लर्निंग आउटकम्स और क्रेडिट सिस्टम की विस्तृत

जानकारी प्रदान की गई, जिससे शिक्षकगण अपने-अपने संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण एवं समकालीन शिक्षा प्रदान कर सकें। इस कार्यशाला में एम.एस.बी.ए.ई., मुंबई के निदेशक प्रो. विनोद आर. दांडगे, सचिव श्री संदीप डोंगरे, उप सचिव श्रीमती आरती श्रावस्ती तथा सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट एंड आर्किटेक्चर के प्राचार्य प्रो. राजीव मिश्रा उपस्थित थे। प्रथम कार्यशाला के समन्वयक डॉ. अंजू रौले व डॉ. जे. पी. टेगर थे व द्वितीय कार्यशाला के समन्वयक डॉ. जे. पी. टेगर व डॉ. हुसैन जीवा खान थे।



प्रश्न बैंक पेपर डिजाइनिंग एवं मूल्यांकन आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 23 से 27 जून 2025 तक विस्तार केंद्र, पुणे में “प्रश्न बैंक पेपर डिजाइनिंग एवं मूल्यांकन” विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थानों से 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को आउटकम आधारित शिक्षा (OBE) के अनुरूप प्रभावी प्रश्न बैंक निर्माण, प्रश्नपत्र डिजाइनिंग और निष्पक्ष मूल्यांकन की रणनीतियों से अवगत कराना

था, ताकि तकनीकी शिक्षा संस्थानों में मूल्यांकन की गुणवत्ता और पारदर्शिता को सुदृढ़ किया जा सके। प्रशिक्षण सत्रों में ब्लूम टैक्सोनीमी के अनुसार प्रश्नों का वर्गीकरण, लर्निंग आउटकम्स के अनुरूप प्रश्नों की योजना, विविध प्रश्न प्रारूपों (MCQs, केस स्टडी, सिचुएशनल प्रॉब्लम्स आदि) का चयन, प्रश्न पत्र विश्लेषण तकनीकें तथा विश्वसनीय और वैध मूल्यांकन उपकरणों की अवधारणाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. जे. पी. टेगर व डॉ. वी. डी. पाटिल थे।



मीडिया अनुसंधान एवं विकास शिक्षा विभाग

WAVES में संस्थान की सहभागिता

मुंबई में आयोजित वर्ल्ड ऑडियो विजुअल एंड एंटरटेनमेंट समिट (WAVES 2025) का प्रथम संस्करण अभूतपूर्व सफलता और भव्यता के साथ संपन्न हुआ। चार दिवसीय इस वैश्विक आयोजन ने भारत की मीडिया और मनोरंजन जगत को अंतरराष्ट्रीय पटल पर एक नई ऊँचाई प्रदान की। संस्थान के मीडिया अनुसंधान एवं विकास शिक्षा विभाग की प्रो. सुमन पटनायक, श्री कौशलेंद्र सिंह तोमर और श्री सुमित कालेकर इस सम्मलेन में प्रतिभागिता की और शैक्षणिक नवाचारों को समृद्ध करने के लिए अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों से संवाद किया।

इस ऐतिहासिक समिट का उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने किया। अपने प्रेरणादायी संबोधन में उन्होंने WAVES को "संस्कृति, रचनात्मकता और वैश्विक संवाद की लहर" बताया और युवाओं से आग्रह किया कि वे अपनी कहानियों को दुनिया तक पहुँचाएं और भारत को वैश्विक रचनात्मकता का केंद्र बनाएं। WAVES 2025 में 140 से अधिक सत्रों का आयोजन हुआ, जिनमें डिजिटल मीडिया, फिल्म, एनीमेशन, गेमिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे समकालीन विषयों पर गहन चर्चा हुई। इन सत्रों में देश-विदेश की प्रतिष्ठित हस्तियों ने भाग लिया, जिनमें मुकेश अंबानी, टेड

सरानडोस (Netflix), नील मोहन (YouTube), दीपिका पादुकोण, शाहरुख खान और अन्य प्रमुख नाम शामिल हैं।

मास्टरक्लास सत्रों में आमिर खान, फरहान अख्तर और माइकल लेहमन ने अभिनय, निर्देशन और फिल्म निर्माण पर बहुमूल्य मार्गदर्शन दिया। 77 देशों की भागीदारी के साथ आयोजित ग्लोबल मीडिया डायलॉग में 'WAVES घोषणा पत्र' को अपनाया गया। इस घोषणा पत्र में मीडिया के माध्यम से वैश्विक शांति, सांस्कृतिक विविधता और डिजिटल समावेशन को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता जताई गई। 'भारत मंडप', जो "कला से कोड तक" थीम पर आधारित था, समिट का प्रमुख आकर्षण रहा। इस मंडप ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और तकनीकी प्रगति को एक साथ प्रस्तुत किया। प्रधानमंत्री मोदी सहित कई केंद्रीय मंत्रियों ने इस मंडप का दौरा कर इसकी प्रशंसा की। WAVES 2025 केवल एक सम्मेलन नहीं, बल्कि भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था को वैश्विक नेतृत्व प्रदान करने की दिशा में एक निर्णायक कदम रहा। इस समिट ने भारत को रचनात्मकता, तकनीक और वैश्विक सहयोग के केंद्र में स्थापित करने की नींव रखी है।



विस्तार केन्द्र अहमदाबाद में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

एडवांस इन एआई/एमएल/आईओटी फॉर इंजीनियरिंग अप्लीकेशन पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद द्वारा ई-इन्फोचिप, अहमदाबाद के सहयोग से दिनांक 12 से 16 मई 2025 तक "एडवांस इन एआई/एमएल/आईओटी फॉर इंजीनियरिंग अप्लीकेशन" विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रोग्राम का उद्देश्य प्रतिभागियों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और इंटरनेट ऑफ थिंग्स के आधुनिक अनुप्रयोगों से अवगत कराना था। प्रोग्राम में प्रोफेसर मनीष शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, आईआईटी राम ने स्वास्थ्य देखभाल में एआई और मशीन लर्निंग के उपयोग पर महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया व डॉ. अभिषेक रावत ने ड्रोन टेक्नोलॉजी में आईओटी के अनुप्रयोग

और उन्नत विधियों की जानकारी साझा की। डॉ. पावन शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, आईसीटी, पीडीईयू, गांधीनगर ने लिए पायथन प्रोग्रामिंग पर व्याख्यान देते हुए इसके होम ऑटोमेशन, रोबोटिक्स और आईओटी में उपयोग की व्यावहारिक जानकारी दी। प्रोफेसर सचिन तिवारी व प्रोफेसर संजीत कुमार ने इंटरनेट ऑफ थिंग्स में क्लाउड कंप्यूटिंग टेक्नोलॉजी में नवाचार और रचनात्मकता पर संयुक्त रूप से सत्र प्रस्तुत किए तथा ई-इन्फोचिप्स कंपनी का भ्रमण कर एआई व मशीन लर्निंग में सेमीकंडक्टर के उपयोग की कार्यविधि को समझा। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सचिन तिवारी थे।



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योग अभ्यास

संस्थान के विस्तार केंद्र, अहमदाबाद द्वारा दिनांक 21 जून 2025 को "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" के अवसर पर योग अभ्यास एवं ध्यान सत्र का आयोजन किया गया। वर्तमान जीवनशैली और बदलते खान-पान को ध्यान में रखते हुए योग को स्वस्थ जीवन का सर्वोत्तम माध्यम माना जाता है। विस्तार केंद्र पर आयोजित इस कार्यक्रम में केंद्र के कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों ने सक्रिय भागीदारी दिखाई। सत्र का संचालन श्री अजय कुमार ने किया, जिन्होंने योगासन, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार सहित भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा प्रेषित प्राणायाम और "कार्यस्थल पर योग" के वीडियो प्रदर्शित किए। कार्यक्रम के दौरान प्रोफेसर निशीथ दुबे ने बदलती खान-पान की आदतों के बीच योग के महत्व पर विशेष जोर देते हुए सभी कर्मचारियों से इसे अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल करने का आग्रह किया। इस योग सत्र ने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाते हुए कर्मचारियों के मन में योग को जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने की प्रेरणा प्रदान की।



संस्थान और कर्णावती विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के मध्य एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित

संस्थान के विस्तार केंद्र, अहमदाबाद द्वारा दिनांक 12 मई 2025 को कर्णावती विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) हस्ताक्षरित किया। प्रशिक्षण को बढ़ावा देकर युवाओं को कौशलमूलक बनाना प्रशिक्षण संस्थानों की अहम जिम्मेदारी है, खासकर ऐसे समय में जब युवा नवप्रौद्योगिकी से जुड़े विषयों की ओर आकर्षित हो रहे हैं ताकि वे अपने करियर में उत्कृष्टता हासिल कर सकें। इस अवसर पर प्रोफेसर निशीथ दुबे, समन्वयक गुजरात विस्तार केंद्र तथा कर्णावती विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. तारिक अली सैय्यद ने हस्ताक्षर किए। इस कार्यक्रम में कर्णावती विश्वविद्यालय के निदेशक एकेडमिक प्रोफेसर धीरज कुमार और गुजरात विस्तार केंद्र के अधिकारी श्री टी.के. रॉय भी उपस्थित थे।



कार्यशाला प्रशिक्षक एवं प्रयोगशाला सहायक के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद द्वारा आईआईटी रैम, अहमदाबाद में दिनांक 05 से 09 मई 2025 तक कार्यशाला प्रशिक्षक एवं प्रयोगशाला सहायक के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों में कौशल विकास

एवं क्षमता निर्माण को बढ़ावा देना था। सत्रों में कार्यशाला एवं प्रयोगशाला के महत्व, उपकरणों के रखरखाव, कार्यस्थल पर सुरक्षा मानकों एवं सावधानियों पर गहन चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. ए.एस. वाल्के ने योगदान दिया।



Training for Workshop Instructor/ Lab Assistant (Guj.-4)

Venue:- IIT RAM, Ahmedabad

(Date: 05-09 May 2025)



इमर्जिंग ट्रेंड्स एंड प्रैक्टिसेज इन ऑप्टिमाइजेशन एंड सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 02 से 13 जून तक "इमर्जिंग ट्रेंड्स एंड प्रैक्टिसेज इन ऑप्टिमाइजेशन एंड सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी" विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को सतत प्रौद्योगिकी और अनुकूलन (ऑप्टिमाइजेशन) के क्षेत्र में उभरते रुझानों और व्यावहारिक उपायों से अवगत कराना था। कार्यक्रम में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में प्रोफेसर वी. आर. पटेल (एसोसिएट प्रोफेसर, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग, एल.डी. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग), डॉ. कुणाल ए. भट्ट (एसोसिएट प्रोफेसर, गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज, गांधीनगर) और डॉ. मिहिर वसावडा ने अपने तकनीकी अनुभव व विशेषज्ञता से प्रतिभागियों को लाभान्वित किया। इन विशेषज्ञों ने उभरती हुई तकनीकों, ऊर्जा कुशल समाधानों और टिकाऊ विकास के दृष्टिकोण पर गहन चर्चा की। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. विपिन त्रिपाठी व डॉ. निशीथ दुबे थे।



इंडस्ट्री 4.0 पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के विस्तार केन्द्र, अहमदाबाद द्वारा दिनांक 23 से 27 जून 2025 तक "इंडस्ट्री 4.0" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न संस्थानों से कुल 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को इंडस्ट्री 4.0 की अवधारणा, इसके प्रमुख घटक जैसे साइबर-फिजिकल सिस्टम्स, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, ऑटोमेशन, डेटा एनालिटिक्स और स्मार्ट मैनुफैक्चरिंग की उभरती तकनीकों से परिचित कराना था, जिससे वे वर्तमान औद्योगिक परिदृश्य में बदलावों को समझ सकें और अपने शैक्षणिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र में इनका प्रभावी उपयोग कर सकें। कार्यक्रम में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में डॉ. जैमिन बी. दवे और प्रो निराली आर. सेठ ने अपने तकनीकी अनुभव



और ज्ञान से प्रतिभागियों को मार्गदर्शन प्रदान किया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एल. एस. राजू थे।

एम्पावरिंग एजुकेटर्स थ्रू रिसर्च एंड इन्क्यूबेशन एक्सीलेंस एंड एनईपी इनसाइट्स आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र, अहमदाबाद द्वारा आई-हब, अहमदाबाद, सी.टी.ई.-गांधीनगर के सहयोग से दिनांक 01 से 06 जून 2025 तक "एम्पावरिंग एजुकेटर्स थ्रू रिसर्च एंड इन्क्यूबेशन एक्सीलेंस एंड एनईपी इनसाइट्स" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न संस्थानों से कुल 57 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को अनुसंधान एवं नवप्रवर्तन के महत्व से अवगत कराना तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) की गहन

समझ प्रदान कर उनके शैक्षणिक एवं शोध कौशल को सशक्त बनाना था। प्रतिभागियों को आधुनिक अनुसंधान पद्धतियों, इन्क्यूबेशन प्रक्रियाओं और शिक्षा के नवाचारों के बारे में जानकारी दी गई, जिससे वे अपने संस्थानों में गुणवत्ता और दक्षता को बढ़ावा दे सकें। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो निशीथ दुबे थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ.बी.एल.गुप्ता, डॉ. एस. एस. केदार, डॉ. पल्लवी भटनागर एवं डॉ. अंजू रौले ने सहयोग प्रदान किया।



इंडक्शन प्रोग्राम-2 आयोजित

संस्थान के विस्तार केंद्र, अहमदाबाद द्वारा दिनांक 09 से 20 जून 2025 तक इंडक्शन प्रोग्राम-2 आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को अनुभवात्मक, क्रियात्मक, पूछताछ आधारित एवं सहयोगात्मक शिक्षण विधियों की जानकारी केस स्टडी के माध्यम से दी गई। साथ ही, सिमुलेशन, वर्चुअल लैब, खेल आधारित तथा समस्या आधारित अधिगम पर आधारित गतिविधियाँ करवाई गई। प्रतिभागियों ने इनोवेटिव लैब अनुभवों के डिजाइन पर कार्य किया और उन्हें स्वतंत्र रूप से प्रयोगशालाओं में कार्य करने हेतु प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में स्पेसिफिकेशन टेबल, कोर्स इवोल्यूशन प्लान, प्रश्न पत्र की संरचना एवं विश्लेषण, तथा ओपन बुक एग्जामिनेशन की अवधारणाओं पर भी विस्तृत चर्चा हुई। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एम. सी. पालीवाल थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. रवि कुमार गुप्ता ने योगदान दिया।



विस्तार केंद्र पुणे में आयोजित कार्यक्रम

सस्टेनेबिलिटी एंड ग्रीन टेक्नोलॉजीज इन इंजीनियरिंग करिकुलम पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र पुणे द्वारा दिनांक 09 से 13 जून 2025 तक “सस्टेनेबिलिटी एंड ग्रीन टेक्नोलॉजीज इन इंजीनियरिंग करिकुलम” विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से कुल 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को इंजीनियरिंग में स्थिरता और पर्यावरण संरक्षण से संबंधित चुनौतियों की समझ प्रदान करना था। प्रशिक्षण में सतत विकास के सिद्धांत, सतत विकास के

लक्ष्यों, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण (TVET) में हरितकरण, स्थिरता के संकेतक और उनका मूल्यांकन, जलवायु परिवर्तन को कम करने में स्थिरता की भूमिका, इंजीनियरिंग में हरित पाठ्यक्रम, स्थायी इंजीनियरिंग के लिए विधियाँ, स्थिरता को सक्षम बनाने वाली प्रौद्योगिकियाँ एवं नवीनतम कचरा प्रबंधन तकनीकों पर विस्तृत चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. वी.डी. पाटिल थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. ए.के. जैन ने योगदान दिया।



विस्तार केंद्र गोवा में आयोजित कार्यक्रम

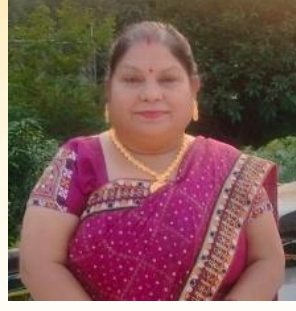
ट्रबलशूटिंग ऑफ व्हीकल एंड रूम एयर कंडीशनिंग पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 05 से 09 मई 2025 तक गोम्स ऑटोमोबाइल्स, गोवा एवं आईएसईए डिज़ाइन एंड सॉल्यूशन्स, गोवा के सहयोग से “ट्रबलशूटिंग ऑफ व्हीकल एंड रूम एयरकंडीशनिंग” विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम मुख्यतः गोवा राज्य के पॉलिटेक्निक और इंजीनियरिंग कॉलेजों के मैकेनिकल विभागों से जुड़े प्रतिभागियों के लिए तैयार किया गया था, जिसमें विभिन्न संस्थानों से कुल 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य बढ़ते हुए तापमान एवं शहरीकरण के साथ वाहनों और भवनों में एयरकंडीशनिंग की बढ़ती आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, प्रतिभागियों को एयरकंडीशनिंग प्रणाली की अद्यतन तकनीकी जानकारी और व्यावहारिक दक्षताओं से परिचित करने था। गोम्स ऑटोमोबाइल्स द्वारा वाहन एयरकंडीशनिंग प्रणालियों पर केंद्रित सत्रों में सामान्य दोष, निदान तकनीक एवं वास्तविक समय में समस्या समाधान के अभ्यास कराए गए। वहीं, आईएसईए डिज़ाइन एंड सॉल्यूशन्स द्वारा रूम एयरकंडीशनिंग पर आधारित सत्रों में रखरखाव, मरम्मत एवं डायग्नोस्टिक विधियों की व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण में एयरकंडीशनिंग प्रणालियों के मूल सिद्धांत एवं घटक, रेफ्रिजेंट्स और पर्यावरणीय पहलू, वाहन एवं रूम एसी प्रणालियों के बीच अंतर, डायग्नोस्टिक टूल्स का प्रभावी उपयोग तथा लाइव डेमो और हैंड्स-ऑन प्रैक्टिस जैसे महत्वपूर्ण विषयों को शामिल किया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा थे।



फंडामेंटल्स ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 16 से 20 जून 2025 तक “फंडामेंटल्स ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस” विषय पर पाँच दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम मुख्यतः गोवा राज्य के पॉलिटेक्निक और इंजीनियरिंग कॉलेजों के मैकेनिकल विभागों से जुड़े प्रतिभागियों के लिए तैयार किया गया था, जिसमें विभिन्न संस्थानों से कुल 222 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के मूल सिद्धांतों, उसकी कार्यप्रणाली, मशीन लर्निंग की बुनियादी समझ तथा एआई के औद्योगिक व शैक्षणिक अनुप्रयोगों की जानकारी प्रदान करना था, जिससे वे इस आधुनिक तकनीक को अपनी शिक्षण प्रक्रिया में प्रभावी रूप से शामिल कर सकें। कार्यक्रम में एआई के सिद्धांतों के साथ-साथ उसके व्यावहारिक पहलुओं, टूल्स एवं प्लेटफॉर्म के उपयोग पर भी विशेष ध्यान दिया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. रमेश गुप्ता बुरेला थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. गणपति एस ने योगदान दिया।



श्रीमती वंदना त्रिपाठी

मां

मां तू है कहां
बिन तेरे सूना जहां
ढूंढूं मैं यहां वहां
ममता की छांव है कहां।
मन तरसे नैना बरसे
कौन धरायें धीर
मन बड़ा अधीर
छलकायें बस नीर
तेरी गोदी अब ना मिलेगी
जीवन बगिया भी ना खिलेगी।
रूठी हैं खुशियां सूना मन
जीवन सूना
ढूंढता एक चैन का कोना
अब ना कोई अपना
टूट गया मधुरिम सपना
बोझिल मन कर रहा रुदन
कहां गये सुनहरे दिन
मन को अब कौन जाने
भटकूं मैं जग में अकेला
देख रही जीवन का मेला।

पावस ऋतु

पावस ऋतु आई, धरती हर्षाई,
ऋतु ने मधुरिम गीत गा सुनाई।
झमाझम झमझम वर्षा राग सुनी,
घन घन घनघोर घटा अब छाई
चातक बोले, कोयल ने तान छेड़ी,
मेंढक मोर खुश हो हो रहे नाचते।
खुश हैं तोता मैना फिरती डाली,

झरने फूट पड़े अब, नदियां बेग से बह निकली,
ताल तलैया भरे बच्चे छप छप खेले,
कागज नाव बन के बारे,
पीऊ पीएं शोर पपीहा करते,
बांध तोड रास्ता नदी भूली,
रंग भैरवी मेघा गाये,
हरियाली धरा पर छाई,
बादल दुल्हा सा सजा,
वर्षा का संगीत मेघा गाये,
बरसी घलघओर घटाएं।

राष्ट्र प्रथम की नीतियों के कारण भारत बनी विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था

- प्रो. सी.सी. त्रिपाठी



भारत की आर्थिक प्रगति का नवीनतम अध्याय न केवल एक प्रेरणादायक उपलब्धि है, बल्कि यह भारत की वैश्विक शक्ति के निरंतर बढ़ते प्रभाव का प्रतीक भी है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के अनुसार, भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का विकास एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जो देश की आर्थिक, सामाजिक, और तकनीकी प्रगति को दर्शाती है। अर्थव्यवस्था का विकास तब होता है जब कोई देश अपने संसाधनों का प्रभावी उपयोग करके उत्पादन, आय, और जीवन की गुणवत्ता में निरंतर और समावेशी सुधार करता है। भारत की GDP लगभग 13-14 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गई है, जो इसे अमेरिका, चीन और जर्मनी के बाद चौथे स्थान पर रखती है। यह मात्र एक सांख्यिकीय उपलब्धि नहीं, बल्कि एक राष्ट्र की दीर्घकालिक योजना, जनसांख्यिकीय ऊर्जा, तकनीकी प्रगति और सामाजिक-सांस्कृतिक बदलावों का परिणाम ही नहीं अपितु प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार की 'राष्ट्र प्रथम' नीति, 'विकसित भारत@2047' की दूरदर्शी परिकल्पना, और

विकास की व्यापक परिणाम है। भारत की अधिक की जनसंख्या 65% लोग 35 वर्ष से हैं, यह युवा जनशक्ति की आर्थिक सफलता चुकी है — एक ऐसा उत्पादकता, नवाचार तीनों के क्षेत्र में समान योगदान दे रहा है। यही जनसांख्यिकीय जिसने भारत को बड़ी अर्थव्यवस्थाओं



समावेशी रणनीति का 1.4 अरब से में से लगभग कम आयु के आज भारत की रीढ़ बन संसाधन, जो और उपभोग रूप से वह लाभांश है, दुनिया की कतार में

खड़ा किया है। भारत का सेवा क्षेत्र GDP में लगभग 55% का योगदान देता है, जो न केवल देश के आंतरिक विकास का वाहक बना है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में भी भारत को एक अहम भूमिका में ले आया है। सूचना प्रौद्योगिकी, बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (BPO), वित्तीय सेवाएं और टेलीकॉम — इन क्षेत्रों में भारत ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। आज भारत IT सेवाओं का अग्रणी निर्यातक है, जिससे न केवल राजस्व में वृद्धि हो रही है, बल्कि वैश्विक व्यापार जगत में भी भारत की विश्वसनीयता बढ़ी है। 'डिजिटल इंडिया' जैसी पहलों ने देश में तकनीकी समावेशन को गति दी है। यूनिकाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) ने भारत को डिजिटल भुगतान की दुनिया में अग्रणी बना दिया है। आज एक आम नागरिक भी ई-कॉमर्स, फिनटेक, और डिजिटल सेवाओं का सहजता से उपयोग कर रहा है, जिससे अर्थव्यवस्था को जमीनी स्तर से गति मिल रही है। 'मेक इन इंडिया' जैसी योजनाओं ने भारत के विनिर्माण क्षेत्र को पुनः जीवंत किया है। ऑटोमोबाइल, फार्मास्यूटिकल्स, टेक्सटाइल और रसायन उद्योगों में भारत की उपस्थिति अब वैश्विक स्तर पर महसूस की जा रही है। फार्मा क्षेत्र में तो भारत को 'विश्व की फार्मसी' कहा जाने लगा है, जो हमारी अनुसंधान शक्ति और उत्पादन क्षमता का परिचायक है। हरित क्रांति के बाद, कृषि में तकनीक का समावेश — जैसे ड्रोन, उन्नत बीज,



और स्मार्ट सिंचाई — किसानों को अधिक उत्पादन और आय की दिशा में प्रेरित कर रहा है। भारत अब न केवल खाद्यान्न में आत्मनिर्भर है, बल्कि वैश्विक खाद्य सुरक्षा में भी भूमिका निभाने को तैयार है। भारत की स्टार्टअप संस्कृति ने एक नई आर्थिक ऊर्जा का संचार किया है।



प्रधानमंत्री की सोच “सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास” अब भारत के आर्थिक और सामाजिक ढांचे में गहराई से समाहित हो चुकी है। सरकार की प्रमुख योजनाएं — जैसे मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, स्किल इंडिया, प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना, और उत्पादकता-आधारित प्रोत्साहन (PLI) — ने न केवल भारत को निवेश और विनिर्माण का हब बनाया है, बल्कि आत्मनिर्भर भारत के मार्ग को भी सशक्त किया है। तकनीकी शिक्षा अब केवल नौकरी की दिशा नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण में नेतृत्व की भूमिका निभाने की दिशा में अग्रसर है। यूनिकॉर्न कंपनियों की बढ़ती संख्या इस बात का प्रमाण है कि भारतीय युवा अब नौकरी चाहने वाले नहीं, बल्कि नौकरी देने वाले बन रहे हैं। नवाचार, तकनीकी समाधान और उद्यमिता की इस लहर ने नए रोजगार और अवसरों का सृजन किया है। 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद से भारत ने निरंतर सुधारों की दिशा में कार्य किया है। GST, इन्सॉल्वेंसी एंड बैंकर्स कोड (IBC), प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में उदारीकरण, और ईज ऑफ डूइंग बिजनेस जैसे सुधारों ने वैश्विक निवेशकों को भारत की ओर आकर्षित किया है। इन प्रयासों ने भारत को एक पारदर्शी, स्थिर और विकासोन्मुखी

आर्थिक वातावरण प्रदान किया है। हरित ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन और सतत विकास जैसे क्षेत्रों में भारत की प्रतिबद्धता इस बात का संकेत है कि यह राष्ट्र केवल वर्तमान में नहीं, बल्कि भविष्य की भी तैयारी कर रहा है। विशेषज्ञों का विश्वास है कि यदि भारत इसी गति से आगे बढ़ता रहा, तो यह अगले दशक में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है।

भारत की आर्थिक प्रगति का नवीनतम अध्याय न केवल गर्व की बात है, बल्कि यह उस समर्पण, नवाचार और नीतिगत दूरदर्शिता का परिणाम है, जिसमें तकनीकी शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। यह उपलब्धि केवल संख्याओं की नहीं, बल्कि उन संस्थागत पहलों की कहानी भी है, जिन्होंने मानव संसाधन को दक्ष बनाकर राष्ट्र निर्माण की गति को तेज किया है। भारत की 1.4 अरब से अधिक जनसंख्या में 65% से अधिक युवा हैं, यह जनसांख्यिकीय लाभांश तभी सार्थक हो सकता है जब इसे गुणवत्तापूर्ण तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ा जाए। तकनीकी संस्थानों की भूमिका इस मोड़ पर और भी महत्वपूर्ण हो जाती है — जहां वे युवाओं को केवल डिग्री नहीं, बल्कि उन्हें नवाचार, डिजिटलीकरण और उद्योगोन्मुखी कौशल से लैस कर रहे हैं।

भारत की आर्थिक यात्रा अब केवल निवेश और उत्पादन तक सीमित नहीं है, यह ज्ञान, तकनीक और नवाचार से प्रेरित विकास की कहानी बन चुकी है। तकनीकी संस्थान इस यात्रा के अभिन्न पथप्रदर्शक हैं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि तकनीकी शिक्षा न केवल रोजगार दे, बल्कि राष्ट्र निर्माण में नेतृत्व भी करे। हमारे तकनीकी संस्थानों का दायित्व है कि वे युवाओं को न केवल कुशल बनाएं, बल्कि उन्हें नवाचार, नेतृत्व और उद्यमिता की ओर भी प्रेरित करें।



लोकमाता अहिल्याबाई होलकर: एक आदर्श जीवन का परिचय

-बबली चतुर्वेदी



भारतवर्ष का इतिहास वीरों, संतों, समाज-सुधारकों और कुशल शासकों से समृद्ध रहा है। किंतु इन सबके बीच एक ऐसी तेजस्विनी नारी का नाम स्वर्णाक्षरों में दर्ज है, जिनका जीवन संघर्ष, करुणा, नीति, न्याय और आध्यात्मिक चेतना से ओतप्रोत था — **लोकमाता अहिल्याबाई होलकर**। उनका जीवन त्याग, न्याय, नीति, धर्म और लोकसेवा का प्रतीक रहा है। उनका जीवन एक ऐसी प्रेरक कथा है, जो बताती है कि एक नारी अपने कर्तव्यों, दूरदर्शिता और धैर्य के साथ न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे राज्य और समाज का मार्गदर्शन कर सकती है। उनका शासनकाल आज भी 'सुशासन' की मिसाल माना जाता है, और उनका नाम श्रद्धा, सम्मान और मातृत्व के साथ लिया जाता है।

31 मई 2025 को भारत ने अपनी एक महानतम शासिका, समाज सुधारक और लोकमाता के रूप में पूजित अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती मनाई। यह अवसर केवल ऐतिहासिक नहीं, बल्कि नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक चेतना का पुनर्जागरण भी था। त्रिशताब्दी वर्ष ने हमें उनके जीवन और कार्यों को फिर से समझने, सराहने और उनसे प्रेरणा लेने का अनमोल अवसर दिया।

यह लेख लोकमाता अहिल्याबाई होलकर के सम्पूर्ण जीवन पर आधारित एक श्रृंखला की भूमिका है, जिसमें उनके प्रारंभिक जीवन से लेकर शासन, समाज-सुधार और आध्यात्मिक योगदान तक की यात्रा का परिचय प्रस्तुत किया गया है।

अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौडी गांव में एक सामान्य ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता मानकोजी शिंदे एक विद्वान एवं धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। अहिल्याबाई को बचपन से ही धर्म, सेवा और विनम्रता की शिक्षा मिली। बाल्यकाल में ही उनकी प्रतिभा, धार्मिकता और सहज नेतृत्वगुणों ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया। एक मान्यता के अनुसार, प्रसिद्ध मराठा सरदार मल्हारराव होलकर ने उन्हें एक बार गांव के मंदिर में पूजा करते देखा और अपने पुत्र खंडेराव होलकर से विवाह हेतु उन्हें अपनी पुत्रवधू बनाने का निर्णय लिया। इसी विवाह से अहिल्याबाई के जीवन ने नया मोड़ लिया। उन्होंने राज्य के रीति-नीति, प्रशासनिक दृष्टिकोण और राजपरिवार के उत्तरदायित्व को बहुत शीघ्र आत्मसात कर लिया। वे एक आदर्श बहू और पत्नी बनीं। विवाह के पश्चात अहिल्याबाई होलकर परिवार की परंपराओं में रम गईं, किन्तु नियति ने उनके जीवन में अनेक परीक्षा-पर्व रखे थे।

उनकी शादी 8 वर्ष की उम्र में खंडेराव होलकर से हुई, लेकिन केवल 29 वर्ष की उम्र में वे विधवा हो गईं। इसके बाद वे सती होना चाहती थीं, परन्तु उनके ससुर मल्हारराव ने उन्हें रोका और राजकीय प्रशासन में प्रशिक्षित किया। इसके कुछ ही समय बाद उनके पिता तुल्य ससुर मल्हारराव का भी निधन हो गया। दुःखद घटनाओं की श्रृंखला यहीं नहीं रुकी—उनके एकमात्र पुत्र मालेराव का भी अल्पायु में देहांत हो गया। ऐसे समय में जब एक स्त्री का संसार उजड़ जाता है, अहिल्याबाई ने स्वयं को टूटने नहीं दिया। उन्होंने अपने हौसले, विवेक और निष्ठा से राज्य का कार्यभार संभाला। उन्होंने राज्य संचालन की बागडोर अपने हाथ में ली और इंदौर राज्य को नए युग की ओर ले गईं। सन् 1767 में अहिल्याबाई ने इंदौर राज्य की गद्दी संभाली। वह उस युग की पहली महिला थीं जिन्होंने इतने बड़े राज्य का शासन संभाला। उन्होंने अपने शासन में न्याय, प्रशासन और जनकल्याण को सर्वोपरि

रखा। उनकी न्यायप्रियता इतनी प्रसिद्ध थी कि लोग दूर-दूर से अपनी फरियादें लेकर इंदौर आते थे। उन्होंने भ्रष्टाचार का अंत कर पारदर्शी शासन की स्थापना की। उनकी न्यायसभा में सबको समान अवसर मिलता था — राजा और रंक के लिए एक ही नियम थे।

अहिल्याबाई ने महेश्वर को अपनी राजधानी के रूप में चुनकर उसे एक बहुआयामी नगर में परिवर्तित किया। उन्होंने यहाँ राजमहल, किले, घाट, मंदिर, धर्मशालाएँ, बाजार और जलसंरचना का निर्माण करवाया। नर्मदा नदी के तट पर स्थित महेश्वर को उन्होंने एक धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक केंद्र के रूप में स्थापित किया, जो समय के साथ व्यापारिक नगर में परिवर्तित हो गया। लोकमाता अहिल्याबाई ने महेश्वर को शिक्षा, कला और संस्कृति का केंद्र बनाया। उन्होंने कवियों, पंडितों और कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया। संस्कृत, मराठी और धर्मशास्त्र में गहरी रुचि रखने वाली अहिल्याबाई खुद भी साहित्यिक प्रतिभा से संपन्न थीं। अहिल्याबाई ने पारंपरिक वस्त्र निर्माण को बढ़ावा देने हेतु बुनकरों को विशेष संरक्षण प्रदान किया, इन्हीं प्रयासों से प्रसिद्ध **महेश्वरी साड़ी** की बुनाई का आरंभ हुआ, जो आज विश्वभर में अपने महीन रेशों और पारंपरिक डिजाइन के लिए जानी जाती है। यह न केवल एक हस्तशिल्प उत्पाद है, बल्कि आर्थिक



स्वावलंबन, महिला सहभागिता और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक भी बन चुका है। आज भी यह उद्योग हजारों परिवारों को आजीविका प्रदान कर रहा है। अहिल्याबाई की सबसे प्रसिद्ध उपलब्धियों में उनके द्वारा कराए गए **धार्मिक एवं सांस्कृतिक पुनर्निर्माण** कार्य हैं। उन्होंने सम्पूर्ण भारत में तीर्थस्थलों, मंदिरों, धर्मशालाओं, घाटों, कुंडों और सरोवरों का निर्माण कराया। काशी विश्वनाथ मंदिर, सोमनाथ, रामेश्वरम्, द्वारका, वृंदावन, गंगाघाट, बद्रीनाथ जैसे स्थलों का विकास उन्हीं के प्रयासों से संभव हुआ। उन्होंने यात्रियों के लिए धर्मशालाएँ, कुंड, सरोवर, और अन्नक्षेत्र बनवाए। वे न केवल धर्मप्रेमी थीं, बल्कि सभी संप्रदायों का आदर करती थीं।

अपने दयालु स्वभाव, जनता के लिए मातृवत स्नेह और निष्कलंक चरित्र के कारण उन्हें **“लोकमाता”** कहा गया। उन्होंने कभी भी विलासिता का जीवन नहीं अपनाया। उनकी दिनचर्या सरल, संयमित और कर्मशील थी। वे जनसामान्य से संवाद करतीं, उनकी समस्याएँ सुनतीं और समाधान करातीं। 13 अगस्त 1795 को महेश्वर में उन्होंने अपने शरीर का त्याग किया, उन्हें मरणोपरान्त **“पुण्यश्लोक”** की उपाधि से सम्मानित किया गया। उनका जीवन आज भी एक आदर्श के रूप में जीवित है।

अहिल्याबाई होलकर का जीवन स्त्री-शक्ति, धर्मनिष्ठा और जनसेवा का अद्वितीय संगम है। उन्होंने भारतीय नारी की शक्ति को सिद्ध किया और दिखाया कि करुणा और नेतृत्व साथ-साथ चल सकते हैं। उनके नाम पर भारत सरकार, मध्यप्रदेश शासन एवं कई सामाजिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कार, स्मारक, संग्रहालय और योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। महेश्वर में स्थित उनका किला और घाट आज भी उनकी स्मृति को जीवंत रखते हैं। महेश्वर आज भी उनके विकासात्मक दृष्टिकोण की प्रतिमूर्ति है — जहाँ सादगी में भव्यता, परंपरा में प्रगति और नारी में शक्ति समाहित है। उनकी आर्थिक सोच, महिला-हितैषी योजनाएँ और स्थानीय उद्यमों के प्रति समर्थन, आज भी भारत के नीति-निर्माताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।



लोकमाता अहिल्याबाई होलकर केवल एक रानी नहीं थीं — वे एक विचार थीं, एक युग थीं, एक ऐसी मिसाल थीं जो भारतीय नारी की क्षमता, नेतृत्व और करुणा का प्रमाण हैं। उनका जीवन आज की नारी, प्रशासकों, समाज-सुधारकों और युवाओं के लिए एक प्रकाशस्तंभ के समान है।